नवारंभ – नगर एवं राज्य

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» द्वितीय नगरीकरण का अर्थ और उदय

प्रश्न 1 (आसान). द्वितीय नगरीकरण का उदय किस नदी के मैदानी क्षेत्र में हुआ?
उत्तर – गंगा नदी के मैदानी क्षेत्र में।

प्रश्न 2 (आसान). द्वितीय नगरीकरण का समय मोटे तौर पर क्या था?
उत्तर – लगभग 1000 ईसा पूर्व के बाद।

प्रश्न 3 (मध्यम). सिंधु घाटी सभ्यता को किस नगरीकरण का दौर माना जाता है?
उत्तर – प्रथम नगरीकरण का।

प्रश्न 4 (कठिन). द्वितीय नगरीकरण के उदय में लोहे की क्या भूमिका थी?
उत्तर – लोहे के औजारों से कृषि का विकास हुआ और मजबूत हथियारों से राज्यों की सुरक्षा संभव हुई, जिससे नए शहर और राज्य विकसित हुए।

» जनपद और महाजनपद: गठन और विस्तार

प्रश्न 5 (आसान). जनपद का शाब्दिक अर्थ क्या है?
उत्तर – जहाँ 'जन' ने अपने 'पद' (पग) रखे हों।

प्रश्न 6 (आसान). सबसे शक्तिशाली महाजनपदों के कोई दो नाम बताओ।
उत्तर – मगध, कोसल (या वत्स, अवंति)

प्रश्न 7 (मध्यम). जनपदों के महाजनपदों में बदलने का मुख्य कारण क्या था?
उत्तर – बढ़ती कृषि उपज (लोहे के औजारों से), व्यापार का विस्तार और व्यापारिक मार्गों का विकास।

प्रश्न 8 (कठिन). अधिकांश महाजनपद गंगा के मैदानी भाग में ही क्यों केंद्रित थे? कोई दो कारण बताओ।
उत्तर – गंगा के मैदानों की उपजाऊ मिट्टी से अच्छी खेती, आस-पास की पहाड़ियों में लोहे की उपलब्धता और नए व्यापारिक मार्गों का विकास।

» महाजनपदों की राजधानियाँ और नगर-नियोजन

प्रश्न 9 (आसान). महाजनपदों की राजधानी के चारों ओर क्या बनी होती थीं?
उत्तर – विशाल और सुदृढ़ प्राचीरें (मजबूत दीवारें)।

प्रश्न 10 (आसान). प्राचीरों के बाहर क्या होता था?
उत्तर – एक गहरी परिखा (खाई)।

प्रश्न 11 (मध्यम). राजधानियों के प्रवेश द्वार 'सँकरे' क्यों बनाए जाते थे?
उत्तर – प्रवेश द्वार सँकरे इसलिए बनाए जाते थे ताकि नगर में आने-जाने वाले लोगों और वस्तुओं पर प्रहरियों द्वारा नियंत्रण रखा जा सके।

प्रश्न 12 (कठिन). आज भी कुछ पुरानी राजधानियाँ 'आधुनिक नगरों' के रूप में मौजूद हैं – यह क्या दर्शाता है?
उत्तर – यह दर्शाता है कि उन प्राचीन राजधानियों का 'नगर-नियोजन' और 'सुरक्षा व्यवस्था' कितनी 'प्रभावशाली' और 'बेहतरीन' थी, जो इतने लंबे समय तक टिकी रहीं।

» प्रारंभिक शासन प्रणालियाँ: राजतंत्र और गणतंत्र

प्रश्न 13 (आसान). राजतंत्र में राजा का पद कैसे निश्चित होता था?
उत्तर – राजा का पद 'वंशानुगत' होता था।

प्रश्न 14 (आसान). कौन से दो महाजनपद 'गणतंत्र' के अच्छे उदाहरण थे?
उत्तर – वज्जि और मल्ल महाजनपद।

प्रश्न 15 (मध्यम). राजतंत्र और गणतंत्र में मुख्य अंतर क्या था?
उत्तर – राजतंत्र में राजा 'सर्वोच्च' होता था और पद 'वंशानुगत' होता था, जबकि गणतंत्र में 'सभा' या 'समिति' द्वारा 'निर्णय' लिए जाते थे और शासक चुना जाता था।

प्रश्न 16 (कठिन). उस समय 'गणतांत्रिक प्रणाली' को विश्व की सर्वप्रथम प्रणालियों में से एक क्यों माना जाता है?
उत्तर – क्योंकि तब 'राजा का चुनाव' 'सभा या समिति' द्वारा किया जाता था और महत्वपूर्ण निर्णय 'मतदान' से लिए जाते थे, जो आधुनिक 'लोकतंत्र' की नींव जैसा था।

» लौह प्रौद्योगिकी का महत्व

प्रश्न 17 (आसान). पुराने समय में खेती के लिए लोहे के कौन से औजार इस्तेमाल होते थे?
उत्तर – लोहे के हल, कुल्हाड़ियाँ।

प्रश्न 18 (आसान). लोहे के हथियार कांस्य के हथियारों से बेहतर क्यों थे?
उत्तर – वे ज़्यादा मजबूत और धारदार थे।

प्रश्न 19 (मध्यम). लौह प्रौद्योगिकी ने महाजनपदों के उदय में कैसे योगदान दिया?
उत्तर – इसने कृषि को बढ़ाया जिससे आर्थिक समृद्धि आई, और मजबूत हथियार दिए जिससे राज्य अपनी रक्षा और विस्तार कर सके।

प्रश्न 20 (कठिन). कल्पना कीजिए कि अगर लौह प्रौद्योगिकी विकसित न हुई होती, तो प्राचीन भारतीय समाज पर इसका क्या असर पड़ता? कोई दो मुख्य बदलाव बताएँ।
उत्तर – कृषि का उतना विस्तार नहीं हो पाता और शायद महाजनपद उतने शक्तिशाली या बड़े राज्य नहीं बन पाते क्योंकि उनके पास प्रभावी औजार और हथियार नहीं होते।

» आहत सिक्के और व्यापार का विकास

प्रश्न 21 (आसान). भारत के शुरुआती सिक्के मुख्य रूप से किस धातु के बने होते थे?
उत्तर – चाँदी के।

प्रश्न 22 (आसान). 'आहत सिक्के' नाम क्यों पड़ा?
उत्तर – क्योंकि उन पर चिह्न 'पंच' या 'आहत' करके बनाए जाते थे।

प्रश्न 23 (मध्यम). आहत सिक्कों का व्यापार के विकास में क्या योगदान था?
उत्तर – उन्होंने वस्तु-विनिमय की मुश्किलों को कम किया और चीजों का लेन-देन आसान बनाकर व्यापार को बढ़ावा दिया।

प्रश्न 24 (कठिन). महाजनपदों के संदर्भ में, क्या केवल एक ही प्रकार के सिक्के प्रचलन में थे?
उत्तर – नहीं, हर महाजनपद के अपने स्वतंत्र सिक्के थे, पर व्यापार में पड़ोसी राज्यों के सिक्के भी इस्तेमाल होते थे।

» वर्ण-जाति व्यवस्था का प्रारंभिक स्वरूप

प्रश्न 25 (आसान). 'जाति' का संबंध मुख्य रूप से किससे था?
उत्तर – पेशा या जीविका

प्रश्न 26 (आसान). चार मुख्य 'वर्ण' कौन-कौन से थे?
उत्तर – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र

प्रश्न 27 (मध्यम). प्रारंभिक वर्ण-जाति व्यवस्था में लोग अपना व्यवसाय क्यों बदल लेते थे?
उत्तर – अकाल, प्राकृतिक आपदा या परिस्थितियों के बदलने पर

प्रश्न 28 (कठिन). समय के साथ वर्ण-जाति व्यवस्था में क्या बदलाव आया और इसका क्या परिणाम हुआ?
उत्तर – यह व्यवस्था कठोर होती चली गई, जिससे समाज में असमानता और भेदभाव बढ़ा.

» व्यापारिक मार्ग और क्षेत्रीय विकास

प्रश्न 29 (आसान). उत्तरापथ भारत के किन क्षेत्रों को जोड़ता था?
उत्तर – उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों से गंगा के मैदानों और पूर्वोत्तर भारत को जोड़ता था।

प्रश्न 30 (आसान). दक्षिण भारत में किन तीन प्रमुख राज्यों का उदय व्यापारिक मार्गों के कारण हुआ?
उत्तर – चोल, चेर और पांड्य।

प्रश्न 31 (मध्यम). व्यापारिक मार्ग सिर्फ वस्तुओं के लिए ही क्यों महत्वपूर्ण नहीं थे? दो कारण बताओ.
उत्तर – ये मार्ग 'विचारों और शिक्षाओं का आदान-प्रदान' करते थे, और 'संस्कृति' को भी एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र तक फैलाते थे, जिससे सामाजिक और सांस्कृतिक विकास भी होता था।

प्रश्न 32 (कठिन). अगर प्राचीन काल में ये व्यापारिक मार्ग नहीं होते, तो भारत के क्षेत्रीय विकास और नगरों के उदय पर क्या असर पड़ता? अपने विचार बताओ.
उत्तर – अगर ये मार्ग नहीं होते, तो विभिन्न क्षेत्रों के बीच व्यापार बहुत कम होता, जिससे आर्थिक समृद्धि रुक जाती. नए 'नगरों का उभरना' मुश्किल होता और 'दक्षिणी राज्यों' का विकास भी धीमा पड़ता. साथ ही, अलग-अलग संस्कृतियों और विचारों का आदान-प्रदान न होने से पूरे उपमहाद्वीप में 'जुड़ाव' और 'समान विकास' की गति धीमी हो जाती।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. द्वितीय नगरीकरण का उदय भारत के किस भौगोलिक क्षेत्र में मुख्य रूप से हुआ और इसके किन्हीं दो प्रमुख कारणों को बताइए।

› सबसे पहले हमें यह याद करना होगा कि सिंधु घाटी सभ्यता कहाँ थी, वो भारत के पश्चिमी भाग में थी।

› अब हमें सोचना है कि 'द्वितीय नगरीकरण' कहाँ हुआ। यह सिंधु घाटी के पतन के बाद गंगा के मैदानी इलाकों में हुआ।

› फिर कारणों पर आते हैं। 'गंगा के उर्वर मैदान' (fertile plains) की वजह से खेती खूब होने लगी।

› दूसरा बड़ा कारण था 'लौह धातुकर्म' (iron metallurgy) का विकास, जिससे खेती के नए और मजबूत औज़ार बने, और हथियार भी अच्छे बनने लगे। इससे सुरक्षा और उत्पादन दोनों बढ़े।

उत्तर – द्वितीय नगरीकरण का उदय मुख्य रूप से गंगा के मैदानी इलाकों में हुआ। इसके दो प्रमुख कारण थे: गंगा के उर्वर मैदानों में कृषि का अभूतपूर्व विकास और लोहे के औजारों तथा हथियारों का व्यापक प्रयोग।

उदाहरण 2. प्राचीन भारत में जनपद और महाजनपद के बीच मुख्य अंतर क्या था, और उनके गठन के पीछे क्या कारण थे?

› स्टेप 1: अंतर समझना। 'जनपद' छोटे, कुल-आधारित क्षेत्र थे जहाँ 'जन' यानी लोग बसते थे। ये शुरुआती चरण के राज्य थे।

› स्टेप 2: 'महाजनपद' उनसे बड़े और अधिक शक्तिशाली राज्य थे, जो कई 'जनपदों' के मिलकर विकसित होने से बने थे। 'महा' का अर्थ ही 'बड़ा' होता है।

› स्टेप 3: गठन के कारण। 'लोहे के औजारों' के उपयोग से 'कृषि उत्पादन' में वृद्धि हुई। इससे 'population' बढ़ी और 'trade' भी बढ़ा।

› स्टेप 4: 'व्यापारिक मार्गों' के विकास से 'जनपद' आपस में जुड़े और शक्तिशाली होकर 'महाजनपद' में बदल गए।

उत्तर – जनपद छोटे कुल-आधारित राज्य थे, जबकि महाजनपद उनसे बड़े और शक्तिशाली राज्य थे। इनका गठन लोहे के औजारों से बढ़ी कृषि, जनसंख्या वृद्धि और व्यापार के विस्तार के कारण हुआ।

उदाहरण 3. महाजनपदों की राजधानी की कोई दो मुख्य विशेषताएँ बताइए।

› पहला बिंदु: 'विशाल और सुदृढ़ प्राचीरें' – यानी बड़ी और मजबूत दीवारें होती थीं।

› दूसरा बिंदु: 'गहरी परिखा' – मतलब इन दीवारों के बाहर गहरी खाई बनाई जाती थी ताकि दुश्मन आसानी से अंदर न आ सकें।

उत्तर – महाजनपदों की राजधानियों की दो मुख्य विशेषताएँ थीं: विशाल और सुदृढ़ प्राचीरें तथा उनके चारों ओर गहरी परिखा।

उदाहरण 4. प्राचीन भारत के किन्हीं दो महाजनपदों के नाम बताइए जहाँ राजतंत्रात्मक शासन प्रणाली थी और एक ऐसा महाजनपद जहाँ गणतांत्रिक प्रणाली थी।

› सबसे पहले, 'राजतंत्र' का मतलब समझेंगे - यहाँ राजा 'सर्वोच्च अधिकारी' होता था और उसका पद 'वंशानुगत' होता था, मतलब राजा का बेटा ही अगला राजा बनता था।

› अब महाजनपदों के नाम याद करेंगे जहाँ यह 'राजतंत्र' था। जैसे 'मगध' और 'कोसल' बहुत 'शक्तिशाली' राजतंत्र थे।

› फिर, 'गणतंत्र' या 'संघ' का मतलब याद करेंगे - यहाँ 'सभा' या 'समिति' महत्वपूर्ण 'निर्णय' लेती थी और शासक को भी चुनती थी।

› ऐसे 'गणराज्य' के उदाहरण के लिए, 'वज्जि' और 'मल्ल' सबसे प्रसिद्ध थे।

› तो राजतंत्र के लिए हम 'मगध' और 'कोसल' लिखेंगे, और गणतंत्र के लिए 'वज्जि' लिखेंगे।

उत्तर – राजतंत्रात्मक महाजनपद: मगध, कोसल। गणतांत्रिक महाजनपद: वज्जि।

उदाहरण 5. मान लीजिए एक महाजनपद को अपनी खेती बढ़ानी है और दूसरे राज्यों से अपनी रक्षा भी करनी है। लौह प्रौद्योगिकी इसमें कैसे मदद करेगी?

› सबसे पहले, लोहे के 'औजार' (tools) जैसे हल (ploughs) और कुल्हाड़ियाँ (axes) बनने लगे।

› इन औजारों से जंगल काटना आसान हो गया और 'खेती' के लिए ज़्यादा ज़मीन मिल गई।

› लोहे के 'हथियार' (weapons) जैसे तलवार, भाले, और ढाल कांस्य (bronze) के मुकाबले ज़्यादा मजबूत और धारदार बने।

› इन मजबूत हथियारों से 'सेना' (army) ताकतवर हुई, जिससे महाजनपद अपनी रक्षा कर सके और दूसरे राज्यों पर 'अधिकार' (control) भी कर सके।

› नतीजा, 'कृषि' (agriculture) बढ़ी, 'व्यापार' (trade) फला-फूला, और महाजनपद और 'मजबूत राज्य' (stronger states) बन गए।

उत्तर – लौह प्रौद्योगिकी ने कृषि के विस्तार और मजबूत हथियारों के निर्माण से महाजनपदों को आर्थिक और सैन्य रूप से सशक्त बनाया, जिससे नए राज्यों का उदय और उनका विस्तार संभव हो पाया।

उदाहरण 6. प्राचीन भारत में आहत सिक्कों का क्या महत्व था?

› सबसे पहले समझो कि 'barter system' यानी वस्तु-विनिमय प्रणाली में क्या दिक्कतें थीं - जैसे, ज़रूरतों का न मिलना (double coincidence of wants).

› फिर सोचो कि सिक्कों ने इस दिक्कत को कैसे सुलझाया - वे 'medium of exchange' बन गए.

› बताओ कि 'आहत सिक्कों' ने 'trade and commerce' को बढ़ावा कैसे दिया - वे दूर-दूर तक व्यापार करने और आसानी से चीज़ें खरीदने-बेचने में मदद करते थे.

› यह भी बताओ कि हर महाजनपद के अपने सिक्के होने से व्यापार में थोड़ी एकरूपता भी आई.

उत्तर – आहत सिक्के प्राचीन भारत में वस्तु-विनिमय प्रणाली की कमियों को दूर करके व्यापार के विकास में बहुत महत्वपूर्ण थे। उन्होंने वस्तुओं और सेवाओं के लेन-देन को आसान बनाया, जिससे वाणिज्यिक गतिविधियाँ बढ़ीं और आर्थिक विस्तार हुआ।

उदाहरण 7. वर्ण-जाति व्यवस्था के प्रारंभिक स्वरूप में 'जाति' और 'वर्ण' में क्या मुख्य अंतर था?

› सबसे पहले हम 'जाति' को समझेंगे. 'जाति' का सीधा संबंध व्यक्ति के 'पेशा' या 'जीविका' से था. जैसे, अगर कोई बढ़ई का काम करता है, तो वह बढ़ई जाति का है.

› फिर हम 'वर्ण' को देखेंगे. 'वर्ण' एक बड़ी सामाजिक श्रेणी थी जो वैदिक ग्रंथों पर आधारित थी और चार मुख्य प्रकारों में बँटी थी: ब्राह्मण (ज्ञान और धर्म), क्षत्रिय (रक्षा और युद्ध), वैश्य (व्यापार और कृषि), और शूद्र (सेवा और शिल्प).

› अब दोनों में अंतर स्पष्ट करेंगे. 'जाति' मुख्य रूप से 'occupation' पर आधारित थी और इसमें कई उप-जातियाँ भी थीं, जो एक ही पेशे के भीतर होती थीं. जबकि 'वर्ण' एक व्यापक सामाजिक वर्गीकरण था जो समाज के अलग-अलग 'roles' को दर्शाता था. शुरुआती दौर में 'जाति' भी पेशे से जुड़ी थी, लेकिन 'वर्ण' भी 'roles' को बताता था जो बाद में ज्यादा कठोर हो गए. मुख्य अंतर यह है कि 'जाति' अक्सर 'जन्म' और 'पेशा' दोनों से जुड़ गई, जबकि 'वर्ण' एक व्यापक 'सामाजिक भूमिका' का ढाँचा था.

उत्तर – 'जाति' व्यक्ति के पेशे या जीविका पर आधारित एक समुदाय था, जो पीढ़ी दर पीढ़ी चलता था, जबकि 'वर्ण' एक व्यापक सामाजिक वर्गीकरण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) था जो वैदिक ग्रंथों से निकला था और समाज की मुख्य भूमिकाओं को दर्शाता था.

उदाहरण 8. प्राचीन भारत में 'उत्तरापथ' और 'दक्षिणापथ' नामक व्यापारिक मार्गों का क्या महत्व था? समझाएँ.

› सबसे पहले, हम यह समझेंगे कि ये 'उत्तरापथ' और 'दक्षिणापथ' क्या थे. उत्तरापथ उत्तर-पश्चिम से शुरू होकर गंगा के मैदानों से पूर्वोत्तर भारत तक जाता था, और दक्षिणापथ कौशांबी (प्रयागराज के पास) से विंध्य पर्वत पार करके दक्षिण भारत तक पहुँचता था.

› दूसरा, हम इन मार्गों से होने वाले 'व्यापार' के बारे में बात करेंगे. ये मार्ग वस्तुओं जैसे मसाले, रत्न, सोना आदि के आदान-प्रदान के लिए मुख्य धुरी थे, जिससे आर्थिक समृद्धि आती थी.

› तीसरा, इन मार्गों का 'नगर विकास' पर क्या असर हुआ, यह देखेंगे. इन रास्तों के किनारे कई 'प्रमुख नगर उभरे', जैसे ओडिशा का शिशुपालगढ़, जो बाद में महत्वपूर्ण केंद्र बन गए.

› चौथा, ये मार्ग 'क्षेत्रीय विकास और राज्यों के उदय' में कैसे सहायक हुए. विशेषकर 'दक्षिण भारत में तीन प्रमुख राज्यों– चोल, चेर और पांड्य का उदय हुआ', जो इन व्यापारिक गतिविधियों से लाभान्वित हुए.

› और आखिर में, ये मार्ग केवल व्यापार नहीं, बल्कि 'संस्कृति, विचारों और शिक्षाओं का आदान-प्रदान' का भी माध्यम थे, जिससे पूरे उपमहाद्वीप में एक जुड़ाव पैदा हुआ.

उत्तर – उत्तरापथ और दक्षिणापथ प्राचीन भारत के महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्ग थे. ये मार्ग वस्तुओं के व्यापार, नए नगरों के विकास (जैसे शिशुपालगढ़), दक्षिण भारत में चोल, चेर, पांड्य जैसे बड़े राज्यों के उदय, और संस्कृति व विचारों के आदान-प्रदान में केंद्रीय भूमिका निभाते थे, जिससे पूरे उपमहाद्वीप का क्षेत्रीय विकास हुआ.

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, खासकर 'द्वितीय नगरीकरण के कारण' और 'गंगा के मैदानों की भूमिका' पर अक्सर सवाल आते हैं।

• 16 महाजनपदों और उनके भौगोलिक विस्तार से जुड़े सवाल मानचित्र पर भी आ सकते हैं, इसलिए मानचित्र देखकर उनकी राजधानियों और स्थिति को ज़रूर पहचानना।

• इस भाग से 'राजधानियों की विशेषताओं' पर सीधे प्रश्न आते हैं। 'प्राचीरें', 'परिखा' और 'प्रवेश द्वार' – इन शब्दों के अर्थ और महत्व को अच्छे से समझना।

• यह विषय 'सत्ता के वितरण' और 'शासन के प्रकार' को समझने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। बोर्ड परीक्षा में 'राजतंत्र और गणतंत्र' के बीच 'अंतर' या 'उदाहरण' पूछे जा सकते हैं, इसलिए दोनों के 'मुख्य बिंदुओं' को अच्छे से याद रखना।

• लौह प्रौद्योगिकी के कृषि और युद्ध पर प्रभावों को अलग-अलग बिंदुओं में समझाना, यह एक महत्वपूर्ण बोर्ड परीक्षा का प्रश्न हो सकता है।

• आहत सिक्कों के प्रकार, उनके निर्माण की विधि और व्यापार में उनकी भूमिका पर अक्सर छोटे प्रश्न आते हैं।

• यह विषय 'भारतीय समाज' के विकास पर आधारित है, इसलिए इसके प्रारंभिक लचीलेपन और बाद में आई कठोरता को उदाहरणों के साथ स्पष्ट करने वाले प्रश्न बोर्ड परीक्षा में अक्सर आते हैं.

एक नज़र में रिवीज़न

› द्वितीय नगरीकरण: सिंधु घाटी के बाद गंगा मैदान में नए शहरों का उदय, लोहे और कृषि के कारण।

› जनपद (छोटे कुल-राज्य) महाजनपद (बड़े शक्तिशाली राज्य) कृषि-व्यापार वृद्धि से।

› महाजनपदों की राजधानियाँ: विशाल प्राचीरें, गहरी परिखा, सँकरे प्रवेश द्वार, नियंत्रण हेतु।

› राजतंत्र: राजा वंशानुगत; गणतंत्र: सभा/समिति द्वारा शासक चयन।

› लोहे से कृषि बढ़ी, हथियार सुधरे, राज्यों का उदय हुआ।

› आहत सिक्के: चांदी के, पंच-मार्क वाले, व्यापार विकास में सहायक.

› वर्ण-जाति: पेशे (जाति) व सामाजिक भूमिका (वर्ण) पर आधारित, शुरुआत में लचीली.